मानवतावाद
HUMANISM

"मानवतावाद" शब्द का इस्तेमाल कई रूपों में किया जाता है। भारत के लोकयात या चार्वाक दर्शन में, चीन के कन्फ्यूशियस दर्शन में और प्राचीन ग्रीस में प्रोटागोरस एवं अन्य दार्शनिकों के विचारों में इसकी छाया देखी जाती है। मानवतावाद 14-वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इटली के नवजागरण काल के साहित्यिक आन्दोलन से भी जोड़ा जाता है। बीसवीं सदी के कई पश्चिमी और भारतीय दार्शनिकों ने मानवतावाद का समर्थन किया है। कॉर्लिस लामोन्ट का प्रकृतिवादी या लोकतांत्रिक मानवतावाद और M.N Roy का रैडिकल या वैज्ञानिक मानवतावाद इसके कुछ प्रमुख उदाहरण है।

वैसे तो, "मानवतावाद" शब्द के अर्थ को लेकर कुछ मतभेद देखे गए; कभी-कभी धार्मिक मानवतावाद की चर्चा की जाती है, लेकिन, बीसवीं सदी में धीरे-धीरे इसका प्रयोग मुख्यतः "धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद" के अर्थ में होने लगा। इस अर्थ में मानवतावाद का बुद्धिवाद से निकट संबंध है। ग्लाडविन की डिक्शनरी ऑफ फिलासफी एण्ड साइकोलॉजी के अनुसार "यह विचार, विश्वास अथवा कर्म सम्बन्धी वह पद्धति है, जो ईश्वर का परित्याग करके मनुष्य तथा सांसारिक वस्तुओं पर ही केन्द्रित रहती है"।

लिटल ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी "के अनुसार मानवतावाद उदार मानवीय मूल्यों पर आधारित अधार्मिक दर्शन है।"

मानवतावादियों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन इंटरनेशनल ह्यूमैनिस्ट एण्ड एथिकल यूनियन द्वारा 1996 में "मानवतावाद" की न्यूनतम परिभाषा इस प्रकार है "मानवतावाद एक लोकतांत्रिक और नैतिक जीवन मुद्रा है जो दृढ़तापूर्वक वह कहता है कि मानव को अपने जीवन को अर्थ और आकार प्रदान करने का अधिकार और कर्तव्य उत्तरदायित्व है। यह मानवीय क्षमताओं द्वारा बुद्धि और मुक्त अन्वेषण की मनोवृत्ति से, मानवीय और प्राकृतिक मूल्यों पर आधारित नैतिकता द्वारा एक अधिक मानवोचित समाज के बनाए जाने का समर्थन करता है। यह ईश्वरवादी नहीं है, और यह वास्तविकता के अतिप्राकृतिक दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं करता है।"

"Introduction to Humanism" के लेखक डा० फिलगीट हिआर्थ
के अनुसार मानवतावाद वह विचारधारा है जो मनुष्य को केन्द्र
में रखती है। यह मानव हित, मानव कल्याण, मानवगरीमा,
और मानवीय मूल्यों को सामने रख कर चलती है। इसमें
तर्कबुद्धि को महत्त्व दिया जाता है। कुछ मानवतावादी अपनेको
"बुद्धिवादी" भी कहते हैं। डा० हिआर्थ के अनुसार मानवतावाद
में ईश्वर के विपरित मानव पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।
इसमें मनुष्य की स्वायत्तता पर बल दिया जाता है और कहा जाता
है कि मनुष्य किसी अतिप्राकृतिक शक्ति पर निर्भर नहीं है। इस अर्थ में
मानवतावाद लगभग धर्मनिरपेक्षता के समान प्रतीत होता है।

मानवतावाद के प्रमुख गुण

(i) मानवतावाद में बौद्धिकवाद पर बल दिया जाता है। बुद्धिवाद की
प्रधानता रहती है। बुद्धिवाद के अनुसार इन्द्रियानुभव सहित
तर्कबुद्धि ज्ञान का एकमात्र स्रोत है। बुद्धिवादियो के द्वारा
तार्किक और वैज्ञानिक चिन्तन का समर्थन किया जाता है।
इसमें बुद्धि की सर्वोच्चता स्वीकार की जाती है जिसका उद्देश्य
दर्शनशास्त्र और नीतिशास्त्र की ऐसी व्यवस्था को स्थापित
करना है, जिसका सत्यापन इन्द्रियानुभव द्वारा हो सके और
जो सभी मनमानी पूर्वमान्यताओं या शब्द-प्रमाण से स्वतन्त्र हो।

(ii) मानवतावाद के अन्तर्गत स्वतन्त्रता का समर्थन किया गया
है। स्वतन्त्रता के अन्तर्गत न सिर्फ विवेक और विश्वास की
स्वतन्त्रता को, बल्कि "
(iii) मानवतावादियो द्वारा मानव-अधिकार को स्वीकार गया है।
मानव-अधिकार मानवो का मानवो के लिए, मानवो द्वारा
~~दिया गया अधिकार है।~~ सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार है।

(iv) मानवतावादियों द्वारा उदार लोकतान्त्रिक मूल्यों और लोकतान्त्रिक
शासन पद्धति का समर्थन किया जाता है।

रॉय ने 20वीं शताब्दी में नवमानवतावाद या रैडिकल मानवतावाद का परिचय दिया। अपने नवमानवतावाद में M.N Roy ने व्यक्ति और उसकी स्वतन्त्रता को सर्वोच्च स्थान दिया है। रॉय की प्र. के अनुसार व्यक्ति ही समाज के मूल में है। व्यक्ति को प्राप्त स्वतन्त्रता और सुख से अलग सामाजिक विकास एक काल्पनिक आदर्श है। सामाजिक कल्याण व्यक्ति के कल्याण द्वारा ही सम्भव है। स्वतन्त्रता की खोज और सत्य की तलाश मानव विकास के बुनियादी प्रेरक तत्व हैं। स्वतन्त्रता की खोज बुद्धि और भावना के उच्च स्तर पर जीव-वैज्ञानिक अस्तित्व के संघर्ष या जीवन संघर्ष (Struggle for existence) का ही विस्तार है। सत्य की इस संघर्ष का परिणाम है। M.N रॉय के अनुसार सामाजिक-राजनीतिक दर्शन की शुरुआत इस बुनियादी विचार से होनी चाहिए कि व्यक्ति समाज से पहले आता है, और व्यक्ति ही स्वतन्त्रता का अनुभव कर सकता है।

रॉय के अनुसार किसी भी क्रांतिकारी या मुक्तपथी सामाजिक-दर्शन का कार्य इस बुनियादी तथ्य पर बल देना है कि अपने विश्व का निर्माता स्वयं मनुष्य है, और वह एक चिन्तनशील प्राणी और व्यक्ति के रूप में ही विश्व का नवनिर्माण कर सकता है। मनुष्य का मस्तिष्क भी एक उत्पादन का साधन है, और इसमें सबसे क्रान्तिकारी वस्तु का उत्पादन होता है। क्रान्ति के लिए रूढ़िभंजक विचारों का होना जरूरी है। रॉय के अनुसार उनकी कल्पना के रैडिकल लोकतान्त्रिक समाज का निर्माण, स्वतन्त्रता के लक्ष्य से प्रेरित ऐसे मनुष्यों के प्रयत्नों से होगा जो जनता के भावी शासक के रूप में नहीं, बल्कि उनके दोस्त, दार्शनिक और मार्ग-दर्शक के रूप में काम करेंगे। स्वतन्त्रता के अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उनका